❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

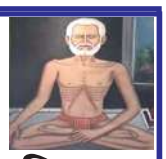

वर्ष 42, अंक 42 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 सितम्बर, 2019 से रविवार 15 सितम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्यजगत की ओर से
समस्त देशवासियों को
स्वामी विरजानन्द दण्डी स्मृति दिवस
(14 सितम्बर) पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)
आश्विन शु० 13-14-15 विक्रमी सं० 2076

कार्यक्रम स्थल **रामनाथ चौधरी शोध संस्थान-वाटिका**
सुन्दर पुर मार्ग, नरिया, लंका, वाराणसी

* समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
* इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करें। सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
* आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
* सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
* आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।
* ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर सम्पर्क करें- आवास (नि:शुल्क) अखिलेश आर्य 9451119659 (स:शुल्क) रविप्रकाश आर्य 9415389341

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।
यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी (स्वागताध्यक्ष) **आर्य ज्ञानेन्द्र गांधी** (संयोजक) **सतीश चड्डा** (व्यवस्था संयोजक)

स्थानीय संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

विशेष सूचना : जो श्रद्धालु महानुभाव वैदिक धर्म महासम्मेलन वाराणसी में भाग लेने के लिए हवाई अथवा रेल यात्रा के माध्यम से पहुंच रहे हैं वे आवास व्यवस्था हेतु अपनी सूचना पर sammelanvaranasi@gmail.com ईमेल करें।

वेद-स्वाध्याय

सहन शक्ति की महती महिमा

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।। – अथर्व० 12/1/54
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता – **भूमिः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ – **अहम्** = मैं **सहमानः** = सहन करनेवाला **अस्मि** = हूँ, **भूम्याम्** = इस भूमि पर **उत्तरः नाम** = उत्कृष्टतर प्रसिद्ध हूँ। मैं **अभीषाड्** = मुकाबले में आये हुए को सहनेवाला **अस्मि** = हूँ, **विश्वाषाड्** = सब-कुछ सहनेवाला हूँ, **आशां आशाम्** = प्रत्येक दिशा में, प्रत्येक इच्छापूर्ति के लिए सब-कुछ **विषासहि** = विशेषतया बार-बार सह सकनेवाला हूँ।

विनय – मैं सहनशक्ति में अदम्य हूँ। मैं सह-सहकर सबको हरा दूँगा, सबको पराभूत कर दूँगा। अपनी भूमि माता के लिए ऐसी क्या वस्तु है जिसे मैं सह नहीं लूँगा! मैं इस भूमि पर 'उत्तर' होकर उत्पन्न हुआ हूँ, उत्कृष्टतर मनुष्य-योनि पाकर उत्पन्न हुआ हूँ। मुझे अपने मनुष्यत्व का अभिमान है। मैं मनुष्य होकर कभी सहन करने में कैसे हार खा सकता हूँ? मैं तो भूमिमाता का मुख उज्ज्वल करने के लिए असह्य-से-असह्य कठिनाइयों और मुसीबतों को सह डालूँगा। मेरे मुकाबले में जो कोई आएगा उसे मैं अपनी सहनशक्ति द्वारा वशीभूत कर लूँगा, अपने सामने नमा लूँगा। मेरे अभिमुख कोई भी प्रतिद्वन्द्वी खड़ा नहीं रह सकता। मैं उत्तर हूँ। मैं सब-कुछ सह लूँगा। मैं भूमिमाता का पुत्र हूँ, मैं तो जिस दिशा में पैर रखूँगा उसे ही अपनी सहनशक्ति द्वारा अपने सामने झुका लूँगा; जिस आशा या इच्छा से निकलूँगा उसे ही अपने इस अमोघ अस्त्र द्वारा अधिगत कर लूँगा; मैं अभीषाड् हूँ, मैं विश्वाषाड् हूँ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मूलनिवासियों की थ्योरी को लगा धक्का : आर्य ही हैं भारतीय

कई सालों से मूलनिवासी और आर्यन थ्योरी गढ़कर जो लोग अपनी इतिहास और राजनीति की दुकान चला रहे थे। अब हरियाणा के हिसार जिले के राखीगढ़ी में मिले कंकालों पर किये गये डीएनए शोध से आर्यों के आक्रमणकारी होने की थ्योरी मनघड़ंत साबित हुई। 2015 में राखीगढ़ी सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र में मिले कंकालों के डीएनए सैंपल की जांच पूरी गई है। पुणे के डेक्कन कॉलेज के पुरातत्त्वविदों के अनुसार कंकालों के डीएनए मध्य एशियन लोगों के जीन से नहीं मिलते हैं।

असल में साल 2015 में राखीगढ़ी में हजारों साल पहले कुछ कंकाल मिले थे। पुरातत्ववेत्ता वसंत शिंदे की अगुवाई में इन कंकालों पर अध्ययन किये गये। शुरूआत में कहा गया कि ये कंकाल ईरानी सभ्यता से काफी मिलते जुलते हैं। लेकिन हाल ही प्रकाशित हुए शोध से पता चलता है कि दक्षिण एशिया में खेती किसानी का जो काम शुरू हुआ था वो यहां के स्थानीय लोगों द्वारा शुरू हुआ था न कि पश्चिम से लोग यहां आए थे।

इस शोध में सामने आया है कि 9000 साल पहले भारत के लोगों ने ही कृषि की शुरुआत की थी। इसके बाद ये ईरान व इराक होते हुए पूरी दुनिया में पहुंची। भारत के विकास में यहीं के लोगों का योगदान है। कृषि से लेकर विज्ञान तक, यहां पर समय समय पर विकास होता रहा है। इस अध्ययन को पूरा करने में 3 साल का समय लगा है। अध्ययन करने वाली टीम में भारत के पुरातत्त्वविद और हारवर्ड मेडिकल स्कूल के डीएनए एक्सपर्ट शामिल हैं। इस टीम ने साइंटिफिक जनरल (सेल अंडर द टाइटल) नाम से रिपोर्ट प्रकाशित की है।

राखीगढ़ी में खुदाई करनेवाले पुरातत्त्वविदों के अनुसार, युगल कंकाल का मुंह, हाथ और पैर सभी एक समान हैं। इससे साफ है कि दोनों को जवानी में एक साथ दफनाया गया था। बता दें के ये निष्कर्ष हाल ही में अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, एसीबी जर्नल ऑफ अनैटमी और सेल बायॉलजी में प्रकाशित किए गए थे।

निष्कर्ष में आगे कहा कि कंकाल, जिनकी उम्र 21 से 35 वर्ष के बीच आंकी गई थी, को विश्लेषण के लिए प्रयोगशाला में ले जाया गया था। जहाँ जाँच कंकाल में किसी तरह के आघात या घाव के कोई सबूत नहीं मिले हैं। इस अध्ययन ने साबित किया कि आर्यन आक्रमण सिद्धांत त्रुटिपूर्ण और भ्रामक था और वैदिक युग का ज्ञान और संस्कृति का विकास स्वदेशी लोगों के माध्यम से हुआ था। 5000 साल पुराने कंकालों के अध्ययन के बाद जारी की गई रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई है कि हड़प्पा सभ्यता में हवन और सरस्वती पूजा होती थी। ऐसे में जाहिर आर्यों के बाहर से आने की थ्योरी ही गलत साबित होती है। वैसे पहले भी कई इतिहासकारों का कहना था कि वामपंथियों की आर्यन थ्योरी मनगढ़ंत कल्पना पर आधारित है। जिसकी परतें इस नए शोध से उघड़ती नजर आ रही हैं।

क्योंकि इस रिपोर्ट में तीन बिंदुओं को मुख्य रूप से दर्शाया गया है। पहला, प्राप्त कंकाल उन लोगों से ताल्लुक रखता था, जो दक्षिण एशियाई लोगों का हिस्सा थे। दूसरा, 12 हजार साल से एशिया का एक ही जीन रहा है। तीसरा, भारत में खेती करने और पशुपालन करने वाले लोग बाहर से नहीं आए थे, अगर हड़प्पा सभ्यता के बाद आर्यन बाहर से आए होते तो वह जरुर अपनी संस्कृति साथ लाये होते।

इस रिपोर्ट के निष्कर्षों को स्पष्ट तौर से देखें तो यह अध्ययन मैक्स मूलर, विलियम हंटर और लॉर्ड टॉमस बैबिंग्टन मैकॉले इन तीन लोगों के मुंह पर तमाचे जैसा है। क्योंकि इन तीनों के कारण ही भारत का इतिहास विकृत हुआ। विडम्बना देखिये कि उन्होंने कहा और हमारे देश इतिहासकारों ने मान लिया कि आर्य बाहर से आये थे।

इनकी थ्योरी में आर्यों को घुमंतू या कबीलाई बताया जाता है। बताते हैं ये आर्य ऐसे खानाबदोश लोग थे जिनके पास वेद थे, रथ थे, खुद की भाषा थी और उस भाषा की लिपि भी थी। मतलब यह कि आर्य पढ़े-लिखे, सभ्य और सुसंस्कृत खानाबदोश लोग थे। यह दुनिया का सबसे अनोखा बुद्धि का नमूना है कि खानोबदोश लोग पढ़े लिखे थे और नगर सभ्यताओं में रहने वाले लोग अनपढ़ गंवार थे। दूसरी विडम्बना ये

.....बताते हैं ये आर्य ऐसे खानाबदोश लोग थे जिनके पास वेद थे, रथ थे, खुद की भाषा थी और उस भाषा की लिपि भी थी। मतलब यह कि आर्य पढ़े-लिखे, सभ्य और सुसंस्कृत खानाबदोश लोग थे। यह दुनिया का सबसे अनोखा बुद्धि का नमूना है कि खानोबदोश लोग पढ़े लिखे थे और नगर सभ्यताओं में रहने वाले लोग अनपढ़ गंवार थे। दूसरी विडम्बना ये भी देखिये कि मैक्स मूलर की थ्योरी को सच मानकर हमारे ही देश के इतिहासकारों ने धीरे धीरे यह प्रचारित करना शुरु किया कि सिंधु लोग द्रविड़ थे और वैदिक लोग आर्य थे। सिंधु सभ्यता आर्यों के आगमन के पहले की है और आर्यों ने आकर इस नष्ट कर दिया और बच्चों को भी यही पढ़ाया जाने लगा।.....

भी देखिये कि मैक्स मूलर की थ्योरी को सच मानकर हमारे ही देश के इतिहासकारों ने धीरे धीरे यह प्रचारित करना शुरु किया कि सिंधु लोग द्रविड़ थे और वैदिक लोग आर्य थे। सिंधु सभ्यता आर्यों के आगमन के पहले की है और आर्यों ने आकर इसे नष्ट कर दिया और बच्चों को भी यही पढ़ाया जाने लगा।

हालाँकि कुछ सालों पहले भी आईआईटी खड़गपुर और भारतीय पुरातत्त्व विभाग के वैज्ञानिकों ने सिंधु घाटी सभ्यता की प्राचीनता को लेकर नए तथ्य सामने रखे थे कि यह सभ्यता 5500 साल नहीं बल्कि 8000 साल पुरानी थी। यानि यह सभ्यता मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता से भी पहले की है। मिस्र की सभ्यता 7,000 ईसा पूर्व से 3,000 ईसा पूर्व तक रहने के प्रमाण मिलते हैं, जबकि मोसोपोटामिया की सभ्यता 6500 ईसा पूर्व से 3100 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। जबकि हड़प्पा सभ्यता से 1,0000 वर्ष पूर्व की सभ्यता के प्रमाण भी खोज निकाले हैं।

भले इतिहास आर्यों को लेकर कई दावे किए गए लेकिन फिर भी सवाल ज्यों का त्यों रहा कि आर्य बाहर से आए थे या यहीं भारत के ही निवासी थे। बेशक इसे लेकर वामपंथियों ने कई दावे किए जिसका मकसद भारतीयों को शायद हीन साबित करना रहा हो लेकिन अब इस सवाल का जवाब स्पष्ट नजर आने लगा है। अब वामपंथी इतिहासकारों को अपना ज्ञान भी अपडेट कर लेना चाहिए और मूलनिवासियों के नाम पर चल रही दुकानों पर ताला जड़ देना चाहिए। – ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। – ***संयोजक***

मात्र एक तस्वीर नहीं अपितु एक शिक्षा है

मिशन चंद्रयान 2 चंद्रमा की सतह से महज लगभग जब दो किलोमीटर की दूरी पर था उसका भारत की स्पेस एजेंसी इसरो से सम्पर्क टूट गया। करीब ग्यारह वर्ष के रात-दिन मेहनत करोड़ों रूपये की लागत और करोड़ों देशवासियों का सपना भी इसी के साथ मानो टूट गया। देश के हजारों वैज्ञानिक इस से कुछ पल को मायूस भी हो गये। मायूसी के इस माहौल में देश के प्रधानमंत्री का बेगलुरु स्थित इसरो के मुख्यालय में पहुंचना और इसरो चीफ को गले लगाकर उनकी पीठ थपथापाने वाला पल बेहद भावुक कर देना वाला था।

कुछ लोग भले ही इस तस्वीर को राजनीति से प्रेरित मान रहे हों लेकिन इसे राजनीति के बजाय एक शिक्षा के तौर पर भी देखा जा सकता है। बल्कि यह कहिये कि इसे नैतिक शिक्षा में एक अध्याय के रूप में स्कूलों में जोड़ा जाना चाहिए। क्योंकि यह एक ऐसी शिक्षा है जिसकी हम भारतीयों को अनेकों मौको पर जरूरत महसूस होती है। हम चाहें तो इस तस्वीर को जीवन में उतार सकते हैं। हमारे रोज़मर्रा के जीवन में भी कई बार ऐसे पल आते हैं जब हम खुद को कमजोर महसूस करते हैं। तब हम सोचते है काश कोई हो जो हमें गले से लगाकर कह दे, कुछ नहीं, निराश या मायूस मत हो, हौंसला मत तोड़ सब कुछ सही होगा। देख मैं खड़ा हूँ न तेरे साथ।

केवल हम ही क्यों हमारे परिवार समाज में भी अनेकों ऐसी घटनाएँ सामने आती है जब कोई खुद को अकेला महसूस कर कई बार गलत कदम भी उठा लेते हैं। इसलिए इस तस्वीर को केवल राजनीति

.....यह हकीकत है कि कोटा में सफलता का स्ट्राइक तीस फीसदी से ऊपर रहता है और इंजीनियरिंग और मेडिकल की प्रतियोगी परीक्षाओं में टॉप10 में से कम से पांच छात्र कोटा के ही रहते हैं। लेकिन कोटा का एक और सच भी है जो बेहद भयावह है। एक बड़ी संख्या उन छात्रों की भी है जो नाकाम हो जाते हैं और उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जो अपनी असफलता बर्दाश्त नहीं कर पाते।..... शिक्षकों और अभिभावको की फटकार के कारण न जाने कितने किशोर छात्र-छात्राएं घबराकर, डरकर या अन्य किसी अवसाद के कारण आत्महत्या का रास्ता चुनते हैं।.....

तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए बल्कि खेल, कला और शिक्षा व्यापार के क्षेत्र में जोड़ कर देख सकते हैं। स्कूल में शिक्षक और परिवार में अभिभावक इससे सीख सकते हैं। क्योंकि जब हमारे देश में कोई एक बच्चा मेहनत करने के बावजूद भी खेल, कला या परीक्षा में कम अंक लाता है तो घर में अभिभावक उसे ताने देते हैं। उसे पड़ोसियों के बच्चों के उदाहरण दिए जाते हैं। यह हमारे देश का एक रिवाज सा बन गया है कि अनेक मौकों पर हम ही अपने बच्चों का मनोबल तोड़ देते हैं। एक किस्म से कहें तो एक नासमझी के कारण कई बार बच्चों और युवाओं को शारीरिक और मानसिक यातना के दौर से गुजरना पड़ता है।

विरले ही कोई माता-पिता या शिक्षक ऐसे होते हैं जो उन पलों में उसे ऐसे गले लगाकर कहते हों कि कोई बात नहीं बेटे तुमने अच्छी मेहनत की, आगे और बेहतर करने की कोशिश करना। अभी कुछ दिनों पहले मैं राजस्थान के कोटा शहर की एक खबर पढ़ रहा था कि जनवरी 2019 से मार्च तक यानि तीन महीनों के अन्दर ही वहां के विभिन्न कोचिंग संस्थानों में तैयारी कर रहे 19 छात्र-छात्राएं आत्महत्या कर चुके हैं।

सभी जानते हैं कि इंजीनियर और डॉक्टर बनने का रास्ता कोटा होकर जाता है। इसीलिए देश भर से छात्र कोटा में इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश की तैयारी के लिए कोटा पहुंचते है। हर साल लगभग डेढ़ से दो लाख छात्र-छात्राएं कोटा का रुख करते है। कोटा शहर के हर चौक-चौराहों पर छात्रों की सफलता के बड़े-बड़े होर्डिंग्स बताते हैं कि कोटा में कोचिंग ही सब कुछ है। यह हकीकत है कि कोटा में सफलता का स्ट्राइक तीस फीसदी से ऊपर रहता है और इंजीनियरिंग और मेडिकल की प्रतियोगी परीक्षाओं में टॉप10 में से कम से पांच छात्र कोटा के ही रहते हैं। लेकिन कोटा का एक और सच भी है जो बेहद भयावह है। एक बड़ी संख्या उन छात्रों की भी है जो नाकाम हो जाते हैं और उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जो अपनी असफलता बर्दाश्त नहीं कर पाते।

आंकड़े उठाकर कर देखें तो साल 2018 में 19 छात्र, 2017 में सात छात्र, 2016 में 18 छात्र और 2015 में 31 छात्रों ने मौत को गले लगा लिया। वर्ष 2014 में कोटा में 45 छात्रों ने आत्महत्या की थी, जो 2013 की अपेक्षा लगभग 61.3 प्रतिशत ज्यादा थी। इसमें केवल कोटा शहर ही क्यों इसके अलावा भी देश में सीबीएसई या अन्य केन्द्रीय बोर्ड के अलावा राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दसवीं बारहवी के नतीजे आने के बाद हर वर्ष देश में शिक्षकों और अभिभावको की फटकार के कारण न जाने कितने किशोर छात्र-छात्राएं घबराकर, डरकर या अन्य किसी अवसाद के कारण आत्महत्या का रास्ता चुनते हैं।

देखा जाए तो केवल शिक्षा ही नहीं व्यापार और खेल जगत में भी कई होनहार युवा असफलता के भय और फटकार के कारण आत्महत्या जैसे रास्ते को चुन लेते हैं। ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं अभी हाल में सीसीडी के मालिक सिद्धार्थ हेगड़े ने इतने बड़े मुकाम पर पहुंचकर आत्महत्या का रास्ता चुन लिया। मेरा मानना है ऐसे पलों में यदि अपने लोग गले लगाकर उनका हौसला बढ़ाएं और प्रेरित करें तो नि:संदेह उनकी कार्यशैली में परिणाम अच्छे आयेंगे। शायद लोग इस तस्वीर से प्रेरणा लेंगे और आने वाले समय में इन भावनात्मक पलों का उपयोग अपने परिवार स्कूल और समाज में एक दूसरे को प्रेरित करने के लिए करेंगे।

- विनय आर्य, महामन्त्री

प्रेरक प्रसंग

वे आग्नेय पुरुष - वे धर्म दीवाने

महर्षि दयानन्द के जीवनकाल में ही उनकी कीर्ति पाताल देश (अमरीका) में पहुँच गई। ऋषि दयानन्दजी के बलिदान के पश्चात् आर्यसमाज के सेवकों ने भारत में ही वेद-प्रचार व देशोद्धार के लिए सारी शक्ति लगा दी, विदेश में प्रचार के लिए आर्यसमाज के पास साधन ही न थे। 1893 ई. में अमरीका के कुछ लोगों ने शिकागो में एक धर्मसम्मेलन रक्खा। सारे विश्व के धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों को एक ही मंच पर अपने विचार रखने के लिए आमन्त्रित किया गया।

आर्यसमाज में भी कुछ उत्साही वीरों के मन में वहाँ अपने प्रतिनिधि भेजने का विचार आया। इस कार्य के लिए कुछ धन-संग्रह भी हुआ, परन्तु आर्यसमाज अपने दो प्रतिनिधियों महामहोपाध्याय पण्डित आर्यमुनिजी व महात्मा श्री हंसराज जी को शिकागो भेजने के लिए पूरा धन न जुटा सका। स्वामी विवेकानन्द इसी सम्मेलन में गये और बड़ी प्रसिद्धि पाई।

जो कार्य आर्यसमाज का संगठन न कर पाया, वे आर्यसमाज के दो उत्साही सेवकों ने व्यक्तिगत रूप से कर दिखाया। जिला मुजफ्फरगढ़ (पश्चिमी पंजाब) के दो आर्य युवक डॉक्टर जेंदाराम व सिद्धूराम दोनों ही (न्यायालय में प्रार्थनापत्र लिखने वाले) थे। धर्म-प्रेम इतना था कि सब काम तजकर अमरीका जाने का संकल्प करके इन्होंने एक जहाजी कम्पनी से पत्र-व्यवहार करके कोई नौकरी ले-ली। बहुत-सा आर्यसाहित्य साथ ले-गये। पण्डित गुरुदत्तजी की अंग्रेजी पुस्तकों को रटकर और उनके आधार पर कुछ व्याख्यान बनाकर श्री जेंदारामजी ने वहाँ भाषण देने आरम्भ कर दिये। इन व्याख्यानों का अमरीका में प्रभाव पड़ा। शिकागो के सम्मेलन में भी जेंदाराम ने भाषण दिया। इनके पुरुषार्थ से पण्डित गुरुदत्तजी का साहित्य अमरीका में लोकप्रिय हुआ। पण्डितजी के उपनिषद्भाष्य को एक अमरीकन ने वहाँ छाप दिया। भारत से भी पण्डितजी के उपनिषद्भाष्य का एक शिकागो संस्करण छापकर इन्हें वितरण के लिए भेजा गया। इस संस्करण की एक दुर्लभ प्रति हमारे पास भी है।

एक अमरीकन देवी ने इनके प्रभाव से कन्या महाविद्यालय जालन्धर को पर्याप्त आर्थिक सहायता भेजी। जेंदारामजी को वहाँ लोग वैदिक दर्शन का डॉक्टर कहने लग गये। इसपर जेंदारामजी ने वहाँ बिजली चिकित्सा सीख ली और डॉक्टर बन गये। भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनीजी ने लिखा है वे पंजाब के प्रथम बिजली के डॉक्टर थे। उन्होंने वहाँ एक मासिक पत्र भी निकाला था। उसका नाम क्या था? यह पता नहीं।

सिद्धूराम तो पहले स्वदेश लौट आये, परन्तु डॉक्टर जेंदारामजी ने ढाई वर्ष तक अमरीका में धर्मप्रचार किया। स्वदेश लौटकर वे मुलतान में रहने लगे। लासएंजल्स में डॉक्टर जेंदारामजी ने अपना मुख्य कार्यालय बनाकर वैदिक धर्म की धूम मचा दी। वे फ्राँस भी जाना चाहते थे, परन्तु उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी। यदि आर्यसमाज के दो-चार दीवाने उनकी पीठ ठोक देते, कुछ सहयोग करते तो सम्भव है, वे वहाँ भी कुछ कर दिखाते।

कितने आश्चर्य की बात है कि जो युवक संस्कृत के विद्वान् नहीं थे, अंग्रेजी की भी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाये थे, वे अपनी लगन व उत्साह से अमरीका में स्वदेश के गौरव का कारण बने और सफल मिशनरी सिद्ध हुए। विद्वान् तो विदेश-प्रचार के लिए गये थे, परन्तु आर्यसमाज के इतिहास में डॉक्टर जेंदाराम प्रथम आर्यपुरुष था जो केवल धर्म-प्रचार के लिए विदेश गया था। निश्चय ही ये दोनों बन्धु आग्नेय पुरुष थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

भारत सरकार के मिशन चन्द्रयान-2 पर विशेष

हमारे लिए चाँद पर जाना जरूरी क्यों था?

जिस दिन चंद्रयान-2 ने अन्तरिक्ष के लिए उड़ान भरी थी इसके साथ ही भारत के 130 करोड़ लोगों की आकांक्षाएं भी अंतरिक्ष में चली गई, हमारी निगाहें चाँद पर टिकी और सिर गर्व से उठा। बस कामना यही थी कि विक्रम, प्रज्ञान को सफलतापूर्वक चन्द्रमा की सतह पर आहिस्ता से उतार दे, ताकि हमें चन्द्रमा की सतह के फोटो मिलना प्रारंभ हो जाएं। किन्तु किसी छोटी से तकनीकी चूक से ऐसा हो नहीं पाया और एक ही पल में सारा देश कुछ पलों में मायूस हो गया।

प्रधानमंत्री मोदी ने देश के वैज्ञानिकों से लेकर समस्त देश को आश्वस्त किया कि हर मुश्किल, हर संघर्ष, हर कठिनाई, हमें कुछ नया सिखाकर जाती है, कुछ नए आविष्कार, नई टेक्नोलॉजी के लिए प्रेरित करती है और इसी से हमारी आगे की सफलता तय होती हैं। विज्ञान में विफलता नहीं होती, केवल प्रयोग और प्रयास होते हैं। हमारा सम्पर्क टूटा है हौंसला नहीं। उनके इस भाषण ने मानों इसरो के वैज्ञानिकों को उत्साह भर दिया तो बाकी देश के नागरिकों की उम्मीदों को पुन: जिन्दा कर दिया।

अब सवाल यह है कि इस पूरे घटनाक्रम से आखिर एक आम भारतीय जो दो वक्त की रोटी के जुगाड़ में लगा है, कोई रिक्शा चला रहा है कोई खेत में काम कर रहा है वे लोग इस मिशन चंद्रयान से खुश और दु:खी क्यों हुए उन्हें इससे क्या मिलने वाला था?

असल में हजारों सालों की गुलामी और गरीबी की मकड़जाल में फंसे रहे जिस देश की संपदा मुगल और ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने लूटी हो, जिस देश में आजादी के बाद राजनितिक उठापटक रही हो, एक आम आदमी, जिसने विज्ञान कभी पढ़ा ही न हो, रॉकेट, उपग्रह, ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर जैसे शब्दों से कभी उसका वास्ता न पड़ा हो, उसके लिए इतने बड़े स्तर का यह मिशन किसी परीकथा से कम नहीं था। अपने देश का नाम अन्तरिक्ष में लिखे जाने पर वह स्वयं में गर्व महसूस कर रहा है।

किन्तु इस मौके पर कई लोगों ने सवाल भी उठाये कि इतना पैसा चाँद पर जाने के लिए क्यों बहाया गया? इससे क्या हासिल होगा? ऐसा नहीं है ये सवाल आज खड़े हुए जब अपने शुरूआती दिनों में विक्रम साराभाई और इसरो से जुड़े सभी वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी तब भी उन्हें इस सवालों और तीखी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। विक्रम साराभाई उस समय के राजनीतिक नेतृत्व को यह समझा पाए थे कि हमें मनुष्य और समाज की असल समस्याओं के हल के लिए आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल में किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए।

इसरो की इसी नींव का नतीजा है कि आज भारत के पास अपने उपग्रह हैं जो समय से पहले चेतावनी देकर लाखों जिंदगियों को बचाने में सक्षम हैं। ऐसे उपग्रह हैं जिनसे फसलों और वनों के प्रबंधन और राष्ट्रीय संचार प्रणाली को मजबूत करने में मदद मिल रही है। यदि उस समय यह इसरो की नींव न रखी होती तो आज अधिकतर देशों की तरह हम भी अपनी सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के लिए विकसित देशों की कृपा पर निर्भर रहते।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण कारगिल युद्ध है। चूँकि भारत 1973 से ही अमेरिकी जीपीएस सिस्टम पर निर्भर रहा था। जब साल 1999 में कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तानी सैनिकों ने घुसपैठ की तब भारत ने उनकी लोकेशन और पोजिशन जानने के लिए अमेरिका से मदद मांगी। किन्तु अमेरिका ने पोजिशन बताने से मना कर दिया था। तब हमारी सेना को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी, यदि उस समय अमेरिका हमारी यह मदद कर देता तो हम अपने सैनिकों की जान गंवाए बिना इस युद्ध को जीत जाते। इसके बाद इसरो ने तय किया कि वह अपना रीजनल पोजिशनिंग सिस्टम बनायेंगे, उसमें इस कामयाबी को हासिल किया और साथ ही अमेरिका और रूस के बाद भारत अब तीसरा देश बन गया है जिसके पास अपना नेविगेशन सिस्टम है।

इसका लाभ न सिर्फ हमारी सेना को हुआ बल्कि एक आम भारतीय तक इसका लाभ पहुंचा। आज इस सिस्टम का इस्तेमाल नौसेना के नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, गाड़ियों की ट्रैकिंग, मोबाइल फोन के सिग्नल से लेकर मैप तक हमारा नेविगेशन काम कर रहा है। एक समय था जब दूरदर्शन पर समाचार या कोई कार्यक्रम देखने के लिए परिवार का एक व्यक्ति तो छत पर टीवी एंटीना सही करने में लगा रहता था। कई बार चित्र आ भी जाते थे तो कई बार परेशान होकर टीवी बंद करना पड़ता था। पर आज देश में एक साथ 1000 से अधिक टीवी चैनल चल रहे हैं, लोग चलते-चलते मोबाइल में फिल्म समाचार और मैच देख रहे हैं इन सबमें इस इसरो और देश के वैज्ञानिकों का योगदान नहीं नकारा जा सकता।

इसके अलावा अभी तक देश के समुन्द्र तटीय इलाकों में चक्रवात आते थे और हजारों लोग मारे जाते थे। किन्तु आज चक्रवात को लेकर उपग्रह से मिले आंकड़ों के आधार पर तटीय इलाकों से लाखों लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाकर इसरों के कारण ही इन लोगों की जान बचाई जा रही है। मगर हमें भूलना नहीं चाहिए कि 1960 के दशक में अगर वे खिलौने जैसे रॉकेट न बनाए गए होते तो भारत चांद और मंगल पर अभियान भेजने में सक्षम नहीं हुआ होता।

आज हमें चंद्रयान 2 की चंद्रमा की सतह पर उतरने की विफलता से मायूस नहीं होना चाहिए। हमारे वैज्ञानिकों ने कुछ समय पहले मिशन मंगल की सफलता से दुनिया को चौंकाया था। ये ही वैज्ञानिक थे जिन्होंने एक साथ 104 उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजकर अनूठी इबारत लिखी थी।

....हमें चंद्रयान 2 की चंद्रमा की सतह पर उतरने की विफलता से मायूस नहीं होना चाहिए। हमारे वैज्ञानिकों ने कुछ समय पहले मिशन मंगल की सफलता से दुनिया को चौंकाया था। ये ही वैज्ञानिक थे जिन्होंने एक साथ 104 उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजकर अनूठी इबारत लिखी थी। .....सोवियत संघ ने 1959 से 1976 के बीच 13 कोशिशें करने के बाद सफलता हासिल की थी। काफी कोशिशों के बाद अमेरिका सफल हुआ था। हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है कि उन्होंने इस मिशन में 95 प्रतिशत सफलता पाई। अब हमें प्रचंड विश्वास है कि उन्होंने आखिरी समय में जो चुनौतियां देखीं उनका समाधान तलाशेंगे। .....

इसलिए आज हमें अपने वैज्ञानिकों का उत्साहवर्धन करना चाहिए। ऐसी विफलता तो होती रहती है। रूस अमेरिका चीन भी अनेकों बार विफल रहे। अभी तक चंद्रमा की सतह पर उतरने की कुल 38 कोशिशें की गई हैं। इनमें से महज 52 फीसदी प्रयास ही सफल रहे हैं। चंद्रमा पर दुनिया के केवल छह देशों या एजेंसियों ने अपने यान भेजे हैं लेकिन कामयाबी केवल तीन को मिल पाई है। सोवियत संघ ने 1959 से 1976 के बीच 13 कोशिशें करने के बाद सफलता हासिल की थी। काफी कोशिशों के बाद अमेरिका सफल हुआ था। इजराइल ने इस साल फरवरी को अपना मून मिशन लॉन्च किया था लेकिन उसे भी मायूसी ही हाथ लगी थी। हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है कि उन्होंने इस मिशन में 95 प्रतिशत सफलता पाई। अब हमें प्रचंड विश्वास है कि उन्होंने आखिरी समय में जो चुनौतियां देखीं उनका समाधान तलाशेंगे। जो साहस और कड़ी मेहनत उन्होंने दिखाई है वह ऐतिहासिक है यह भी किसी महान उपलब्धि से कम नहीं है। हम जल्दी ही पुन: कामयाब होंगे।- ***राजीव चौधरी***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का शुभारम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

सतीश चड्डा, महामंत्री,
आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर का प्रथम चरण सम्पन्न

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने दिया प्रशिक्षुओं को आशीर्वाद

आर्यसमाज का प्रचारक होना सौभाग्य की बात – पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

यह पहल आर्यसमाज के संगठन को मजबूत करने की दिशा में सार्थक कदम – सुरेशचन्द्र आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में, आर्य समाज हनुमान रोड़ के प्रांगण में आयोजित 60 दिवसीय महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर के प्रथम चरण का समापन हुआ। इस साप्ताहिक शिविर के मध्य में 5 सितंबर 2019 को पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले धर्म प्रचारको को अपना स्नेहिल आशीर्वाद देकर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उत्तरसभा के प्रधान जी एवं महामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानंद जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री, हनुमान आर्य समाज रोड के प्रधान जी इत्यादि अनेक अन्य गणमान्य महानुभावों के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्त्ता एवं महाशय धर्मपाल मीडिया सैन्टर के कार्यकर्त्ता आदि उपस्थित थे।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी धर्म प्रचारकों का उपस्थित महानुभावों से परिचय कराया। श्री धर्मपाल आर्य जी ने धर्म प्रचारकों को संदेश देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आप के जीवन में यह बहुत बड़ा अवसर है क्योंकि ज्ञान प्राप्त करना एक अलग बात है लेकिन दूसरों को सिखाना यह अपने आपमें चुनौती पूर्ण कार्य है। अपनी योग्यता बढ़ाओ और कभी भी किसी भी स्थिति में हर शंका का समाधान करने के लिए तैयार रहो। जीवन का उद्देश्य बढ़ा बनाओ, योग्य और सामर्थ्यवान बनो। स्वामी धर्मेश्वरानंद जी ने धर्म प्रचारकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि कभी भी जीवन में अनेक कठिनाइयां आए तो महर्षि दयानंद सरस्वती को याद करना, उनसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना, पण्डित लेखराम और स्वामी श्रद्धानंद को याद करना, हर कठिनाई का समाधान मिल जाएगा।

धर्म प्रचारक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सभी सुयोग्य प्रशिक्षुकों में श्री सत्यम आर्य जी, श्री दिनेश आर्य जी, श्री सर्वेश आर्य जी, श्री शैल कुमार आर्य जी, श्री राजबीर आर्य जी, श्री मोहित आर्य जी, श्री आशीष आर्य जी, श्री धर्मवीर आर्य जी, श्री कर्ण आर्य जी, श्री लक्ष्य आर्य जी और श्री सचिन आर्य जी आदि ने इस प्रशिक्षण शिविर के दौरान जो सीखा, समझा उसे प्रस्तुत करते हुए गागर में सागर भरने वाले अद्भुत संक्षिप्त वक्तव्य से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। लक्ष्य आर्य ने बताया कि हमें अब से पहले ऐसा लगता था कि ऋषि दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज ऐसे ही चल रहा है। लेकिन यहां आकर हमें आर्य समाज की सेवाएं और उनका महत्त्व कितना बड़ा है उसकी जानकारी प्राप्त हुई। श्री सत्यम जी ने कहा कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है यह हमें अब पता चला। इस क्रम में धर्म प्रचारकों ने अपने-अपने अनुभव साझा कर सभी के मन में जिज्ञासों का उदय कर दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने धर्म प्रचारकों को शुभकामनाएं देते हुए महाशय धर्मपाल जी को हृदय सम्राट कह करके संबोधित किया। प्रधान जी ने बताया कि महाशय जी के सानिन्ध्य में अनेक सेवा प्रकल्प चल रहे हैं जिन्हें हम लगातार आगे बढ़ा रहे हैं किंतु धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर अद्भुत और अद्वितीय है। सभी धर्म प्रचारक आर्य समाज के उत्थान के लिए अपने आप को सक्षम बनाएं और वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण विश्व में आर्य समाज अग्रिम पंक्ति में खड़ा होगा। इस धर्म प्रचारक प्रकल्प के लिए समर्पित प्रचारकों को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद और शुभकामनाएं हैं। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी ने गायत्री मंत्र के उच्चारण से अपना उद्बोधन प्रारंभ किया तथा अपना स्नेहिल आशीर्वाद देते हुए सभी धर्म प्रचारकों को कहा कि मुझे बहुत प्रसन्नता है आप सब मेरे अपने बच्चे हैं। आपका इतना प्यार मुझे मिल रहा है। आप मुझे अमर कर दोगे। आप सभी सुखी रहें और आर्य समाज को नित नई ऊंचाई प्रदान करें। सभी को बहुत-बहुत प्यार भरा आशीर्वाद।

कार्यक्रम के उपरांत सभी धर्म प्रचारकों को महाशय धर्मपाल जी एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने अपने कर कमलों से एक सुंदर बैग भेंट किया। यह बैग धर्म प्रचारकों के लिए पुस्तकें रखने हेतु दिया गया था। ज्ञात हो कि यह धर्म प्रचारक प्रशिक्षण शिविर का एक पड़ाव समाप्त हुआ है। 11 सितंबर 2019 से दूसरे चरण का आरंभ होगा और 23 सितंबर से तृतीय चरण का शुभारंभ होगा। इस तरह आर्य समाज के उत्थान और प्रचार-प्रसार हेतु आयोजित यह शिविर अपने आपमें रचनात्मक और प्रेरणाप्रद अभियान सिद्ध होगा।

विश्व हिन्दू परिषद् के नेता का स्वागत

अन्तर्राष्ट्रीय विश्व हिन्दू परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी गत दिनों सभा कार्यालय में पधारे। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी द्वारा उनका सम्मान किया एवं आर्य साहित्य भेंट किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज डोरीवालान के प्रधान श्री वागीश शर्मा जी भी उपस्थित थे।

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम, देवघर (झारखण्ड) वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

शनिवार 7 सितम्बर को गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम, देवघर (झारखण्ड) का वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए। **निर्वाचन में प्रधान श्री संजीव चौरसिया, वरिष्ठ उप प्रधान श्री जगदीश केडिया, महामन्त्री आर्य श्री भारत भूषण त्रिपाठी, व. उपमन्त्री श्री अरविन्द वाजपेयी एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री मणि प्रताप निर्वाचित घोषित किए गए। संरक्षक के रूप में श्री दीनदयाल गुप्त जी एवं श्री रमेन्द्र गुप्ता जी को नियुक्त किया गया।**

Europe in Confusion Over God

- Dharmpal Arya

By the way, almost the whole of Europe is a follower of Jesus, but sometime back amidst the debate on the long-standing equality in the Church of England, the first female pastor sitting in the House of Lords of Britain Parliament Reshal Trivik said that " Church of England "should stop using the word 'male gender' for God! In his address, Reshal Trivik also said that God has no gender. Therefore, it cannot be addressed with pronouns like feminine, masculine. Let me tell you that Reshal is the top female priest in the Church of England. By the way, earlier there used to be no female pastor in the world but now in the last few years, it has started to happen.

Also, Reshal Trivik had very humbly told that when everyone says that God has made us like Him and if He has made us like himself then why we perceive him as a man? God is only God; he cannot be seen as a man or a woman. Many other women priests also supported her saying that God is beyond gender, that is, God cannot be portrayed as male or female.

The whole world is living in a lot of confusion about God. And in most of the world, they have been worshipping fake God or we can say that they have been made venerated! Now in the Christian society, sometimes Jesus is called the son of God or even God and sometimes the one who is doing away the suffering of people of the whole world. However, after the address of Reshal Trivik, the holy book Bible of Christians will surely be seen from the eyes of doubt. Because Jesus is God and Issah is his son then He would be surely

either male or female.

According to the Bible, God created the entire universe in 6 days and on the seventh day he rested and that day was Sunday. Now the question is that the person who will take rest must have a body and the body must also have had a gender, that is, it must have been a man or woman. The second one is that if He can create this world in 6 days means building such a huge universe in only 6 days, then why does it take 9 months to build a child, it must be born in a few seconds! With this, the Bible proves to be a book full of untrue or entertaining stories? And, Rashal Travik must understand this first.

The same is the case with Quran-e-Sharif. In the Quran, it is told that Allah has created Adam with both his hands. Now if he created man with both hands, then he must have been either male or female! Because hands are not possible without a body, where there will be a body there will be surely a gender. It means surely Allah must have been either a man or a woman. Does this prove that this book too can be just a collection of fictitious stories like the bible?

Now, what is God? What is his gender? Is it a woman or a man? Answering all these questions, Swami Dayanand Saraswati Ji says in the second law of the Arya Samaj that He is present in every particle, He is formless, He is ubiquitous, He is the beginning, He is infinite and the unborn- He is God.

At the end of the fortieth chapter of the Yajurveda, the essence of the mantra is, "Vedas are the preaching of God to all human O human! Whoever I am here, I am in the sun and other realms too. There is no one bigger than me, like the universal and complete sky exist everywhere, 'I am the greatest, I am the youngest, my name is OM, I do not have any body or body form, so remove the ignorance, enlighten the soul and be a good deed human being.

Now those who are living in doubt by considering God as man or woman, they should know one more thing that there is no gender of soul and God, Vedas have even told man that neither you are a male, nor you are a female, it is just this outer structure which is a man or a woman, otherwise the soul itself is neither a male nor a female. And, God cannot be associated with the body.

Therefore, Reshal Trivik Ji, whatever you have asked and said has already been told by our sages millions of years ago that God is the name of a system which is infinite to subtle and vast to vast. Hence, it is requested to Reshal Travik to completely clear the doubts of herself and the people by returning to Vedas and knowing the true God. - ***President, Delhi Arya Pratinidhi Sabha***

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 27 सितंबर 2019 प्रात: 10 बजे से लेकर 2:30 बजे तक तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में आर्यरत्न ठाकुर विक्रम सिंह के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी प्रणावानंद सरस्वती जी होंगे। संयोजक डॉ. धर्मेंद्र कुमार और देवेश कुमार जी होंगे। इस अवसर पर कई प्रमुख वक्ताओं के उद्बोधन होने सुनिश्चित हैं। आप सब सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। - ***संयोजक***

रक्तदान शिविर सम्पन्न

31 अगस्त 2019 को रोटरी क्लब ऑफ ईस्ट फरीदाबाद एवं बी.के हस्पताल के द्वारा डी.एव.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर-14 फरीदाबाद हरियाणा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विपुल गोयल उद्योगमंत्री हरियाणा सरकार मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्री राजेश महाजन प्रधान आर. सी.एफ ईस्ट, श्री एच.एल.मुरारी जिला निदेशक रक्तदान, श्री तरुण गुप्ता, श्रीमती वेद अधलखा, श्री विकास कुमार, श्री दिनेश चावला आदि उपस्थित थे। इस रक्तदान शिविर में 217 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया जिसमें अभिभावक, बच्चे, शिक्षक और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

- ***श्रीमती अनीता गौतम, प्राचार्य***

समाज एवं राष्ट्र कल्याण हेतु यज्ञ-भजन-प्रवचन

आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-1, दिल्ली-52 के तत्त्वावधान में दिनांक 27-29 सितम्बर को समाज एवं राष्ट्र कल्याण हेतु यज्ञ भजन एवं प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। यज्ञ ब्रह्मा एवं भजनोपदेश डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा एवं प्रवचन स्वामी विदेह योगी (कुरुक्षेत्र) के होंगे। पूर्णाहुति 29 सितम्बर, 2019को होगी। आप सब सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। - ***प्रेम सचदेवा, मन्त्री***

श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी जी की आठवीं पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ भजन, प्रवचन एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री सतेन्द्र आर्य, डॉ. काली प्रसाद मिश्र, डॉ. अशोक कुमार मिश्र, डॉ. रामकुमार पाठक, विकास नारायण सिंह, राकेश श्रीवास्तव, हरिन्द्र सिंह, डॉ. श्यामधर तिवारी, डॉ. जे.पी. सिंह, डॉ. वी.पी. यादव, डॉ. धर्मेन्दु, डॉ. जयश्री, डॉ. कामनी वर्मा, वीरेन्द्र चतुर्वेदी, रामराज आर्य, श्री पारसनाथ मिश्र, सुनील शर्मा, ज्ञानेदु, डॉ. सविता एवं आर्यसमाज जंगीगंज एवं आर्यसमाज ज्ञानपुर के सदस्यों ने श्रद्धांजलि दी।

-***डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी, संयोजक***

फिरोजपुर-झिरका, मेवात -हरियाणा में महापंचायत का आयोजन

25 अगस्त 2019 को फिरोजपुर झिरका (मेवात) में हरियाणा के मेवात क्षेत्र में, लवजिहाद, धर्म परिवर्तन, गौ हत्या के मामलों को लेकर एक विशाल महापंचायत का आयोजन संघर्ष समीति के प्रधान श्री अर्जन देव चावला की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें लगभग 10 हजार व्यक्ति, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के हिंदु संगठनों , आर्य समाज, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल, आर. एस.एस, शिव सेना, जैन समाज, सनातन धर्म एवं सर्वखाप पाल के लोगों ने हिस्सा लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री रामपाल आर्य, प्रधान कन्हैया लाल आर्य, आर्य वेद प्रचार मंडल के प्रधान सुभाष सिंगला, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान लक्ष्मण पाहूजा आदि ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। 54 खापों के चौधरी अरुण जेलदार ने लड़की को तुरंत उसके माता पिता को सौंपकर भाईचारे को कायम रखने की अपील की तथा इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए श्री अरुण जेलदार की अध्यक्षता में 15 सदस्यों की कमेटी गठन करके मुख्यमंत्री हरियाणा से मिलकर क्षेत्र की स्थिति से अवगत कराने का निर्णय लिया तथा हिमाचल प्रदेश की सरकार की तरह धर्मान्तरण पर रोक लगाने एवं लव जिहाद को रोकने के लिये सख्त कानून बनाने तथा मेवात के हिंदुओं को अल्प संख्यक घोषित करने की मांग भी की जाये, प्रस्ताव पास किया।

- पदम चन्द आर्य, पूर्व प्रधान, आर्य वेद प्रचार मंडल (मेवात)

आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा दिल्ली में संचालित 'सहयोग' योजना के लिए ड्राइवर की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव अपना बायोडाटा aryasabha @yahoo.com ईमेल करें अथवा 9650183339 पर सम्पर्क करें।

- ***जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री***

प्रवेश सूचना

पांच दर्शनों एवं उपनिषदों का अध्ययन प्रारम्भ

दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड़ में पांच दर्शनों, उपनिषदों एवं वेद के कुछ चुने हुए अध्यायों का अध्यापन शुरू हो रहा है। प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों के लिए। आयु कम से कम 18 वर्ष, शिक्षा कम से कम 12 या समकक्ष, व्याकरणाचार्य, शास्त्री एवं सनातक को वरीयता, भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा आदि की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क। सम्पर्क करें

दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा- सागरपुर,
ता. - तलोद, जि. साबरकांठा
गुजरात-383307,
फोन : 02770-287518, 9409415011
E-mail: darshanyog@gmail.com,
www.darshanyog.org

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा 29 अगस्त से 8 सितंबर 2019 तक श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी उपाकर्म का भव्य आयोजन किया गया। 29 अगस्त से 1 सितंबर तक लगातार चारों दिन प्रभातफेरी के द्वारा कीर्ति नगर के विभिन्न ब्लाकों व मार्गों पर आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया गया। 2 सितंबर को भव्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न आर्य समाजों से भी आर्य महिलाओं ने सहर्ष भाग लिया। 2 से 7 सितंबर तक कीर्तिनगर के विभिन्न पार्कों में प्रात:कालीन यज्ञों का विशेष आयोजन किया गया। जबकि सायंकाल 7:30 बजे से 9:15 बजे तक भजन एवं प्रवचनों का भव्य आयोजन होता रहा। 8 सितंबर 2019 को इस यज्ञ की पूर्णाहुति एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवं प्रेरक प्रवचन तथा सुंदर सारगर्भित नाटकों का मंचन किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के समय 12 यज्ञकुंडों पर 101 यजमान शोभायमान थे। सभी यजमानों के प्रति आर्य समाज की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सम्मेलन के आरंभ में माता श्रीमती उमा वधवा जी, प्रधाना कविता आर्या जी के मधुर भजनों के लिए धन्यवाद। आर्य गुरुकुल रुड़की एवं रोहतक की प्राचार्या डॉ. सुकामा जी के शिक्षाप्रद प्रवचन एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेद पाठ एवं संगीतमय प्रस्तुति के लिए हार्दिक आभार।

इस कार्यक्रम के समापन समारोह में पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी ने स्वयं आकर आशीर्वाद प्रदान किया जो कि अपने आपमें एक अद्भुत आनंदमय अनुभूति के पल थे। श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्रीमती वीना आर्या जी ने भी कार्यक्रम की प्रशंसा की। आर्य वीरों ने अमर शहीद बिस्मिल व साथियों पर बहुत ही सुन्दर व प्रेरक, मन को झंकझोर देने वाले नाटको का मंचन किया। - ***सतीश चड्डा, मंत्री***

उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़ गुजरात द्वारा 15 से 22 सितंबर 2019 तक स्वामी विवेकानंद जी की अध्यक्षता में 8 दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में आर्ष ग्रंथों के आधार पर ध्यान योग सिखाया जाएगा। सम्पर्क करें -

- आचार्य, 9409415011

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन आमन्त्रित

सरकारी/ गैर सरकारी/ निजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, गुरुकुलों, पाठशालाओं, आश्रमों में आर्ष पाठ विधि से विद्या अध्ययन करने वाले अथवा ऐसे छात्र-छात्राओं जो अन्य विषयों के साथ संस्कृत साहित्य का भी अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन कर रहे हैं अथवा ऐसे विद्यानुरागी जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं अथवा जिनके माता-पिता सहयोग करने में असमर्थ हैं, को आर्यसमाज की ओर से छात्रवृत्ति की सुविधा प्रदान की जा रही है। सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपरोक्त के अन्तर्गत आने वाले छात्र-छात्राएं अपना नाम, पिता/माता/संरक्षक का नाम, पता, विद्यालय/संस्थान का नाम लिखते हुए आवेदन करें। आवेदन पत्र पर विद्यार्थी के प्रधानाचार्य/आचार्य के हस्ताक्षर सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य हों। इच्छुक विद्यार्थी/संस्थान अपने आवेदन पत्र **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

शोक समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के संरक्षक

श्री मदनमोहन सलूजा को पत्नीशोक

आर्य केन्दीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक एवं यज्ञ व्यवस्था के माध्यम से सहयोग करने वाले यज्ञप्रेमी श्री मदन मोहन सलूजा जी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा सलूजा जी का 7 सितम्बर को लगभग 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 8 सितम्बर को पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 सितम्बर को आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम में सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थानों के अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री हरिसिंह आर्य की सासूमां का निधन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक श्री हरिसिंह आर्य जी की सासूमां एवं श्रीमती सुरेशवती जी की पूज्य माता श्रीमती सीता देवी जी का 5 सितम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 15 सितम्बर, 2019 को हनुमान मन्दिर, मोहन नगर, पंखा रोड, नई दिल्ली में दोपहर 1-2 बजे तक सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 सितम्बर, 2019 से रविवार 15 सितम्बर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12-13 सितम्बर, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 सितम्बर, 2019

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी सज्जनों से अनुरोध है कि कृपया निम्न सूचना 9540086759 पर व्हाट्सएप्प करें या sammelanvaranasi@gmail.com पर मेल करें-

1. आने वाले व्यक्तियों की संख्या : .....
2. ग्रुप लीडर का नाम : .....
3. ग्रुप लीडर का फोन नं. : .....
   (एक अतिरिक्त नं. भी दें) : .....
4. कहाँ से आ रहे है : .....
5. वाराणसी पहुंचने की तिथि : .....
6. वाराणसी किस स्टेशन पर पहुचेंगे : .....
7. ट्रेन का पहुचने का समय : .....
8. वापसी की तिथि : .....
9. वापसी का समय और स्टेशन : .....

यदि आप ग्रुप में न आकर व्यक्तिगत आ रहे है, तब भी यह सूचना व्यक्तिगत रूप में भेजे। यह सूचना अगर पहले ही दे दी गयी है तो दोबारा न भेजें। कृपया उपरोक्त सूचना भेजकर सहयोग करें, हम आपको बेहतर और आरामदायक सुविधा देने के लिए प्रयासरत हैं। - *सतीश चड्डा, व्यवस्था संयोजक*

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के
150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

136वां ऋषि स्मृति सम्मेलन का भव्य आयोजन 'प्रथम विश्व आर्यरत्न' से सम्मानित होंगे महाशय धर्मपाल

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास, ओल्ड कैंपस के पास, मोहन पुरा पुलिया के आगे रातानाड़ा, जोधपुर में 29 सितम्बर से 2 अक्तूबर 2019 तक ऋषि स्मृति सम्मेलन का भव्य एवं विराट स्तर पर आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वानों, भजनोपदेशकों और संन्यासियों के उपदेश होंगे। कार्यक्रम में (राष्ट्रीय वेद गोष्ठी) का आयोजन किया जा रहा है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और स्मृतिभवन न्यास की ओर से आर्यरत्न उपाधि से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह